अवध की बेगमें

डॉ. योगेश प्रवीण

अवध की बेगमें

डॉ योगेश प्रवीण

हिन्दी वाङ्मय निधि

सचिव का निवेदन

हिन्दी वाङ्मय निधि की स्थापना पद्मभूषण से अलंकृत, साहित्य वाचस्पति स्वर्गीय पं. श्रीनारायण चतुर्वेदी ने की थी। निधि की स्थापना के पीछे एक गहरी वेदना थी जिसका अनुमान उनके इन शब्दों से किया जा सकता है-

"हिन्दीभाषी जनता को ऐसे विषयों पर पुस्तकें नहीं मिल पातीं जिनसे उसे कूपमण्डूकता से निकाला जा सके और भारत का उपयोगी तथा कर्त्तव्यपरायण नागरिक बनाया जा सके। मैं अफसोस करके रह जाता हूँ कि अनेक मनोरंजक और ज्ञानवर्द्धक पुस्तकें जो अंग्रेज़ी में उपलब्ध हैं, हमारे हिन्दी पाठक को पढ़ने को नहीं मिल सकतीं।

यह स्थिति मेरे चित्त में इतनी अशांति उत्पन्न कर रही है कि मैं कुछ करने के लिए बाध्य हो गया हूँ। इस विषय पर व्यावहारिक दृष्टि से कई वर्षों से विचारता रहा और अन्त में इस परिणाम पर पहुँचा कि मुझे कुछ करना ही चाहिए चाहे वह कितना ही कम क्यों न हो। ऐसी पुस्तकें सामान्य पाठक को सुलभ कराने के प्रयोजन से मैंने पचीस हज़ार रुपये जमाकर 'हिन्दी वाङ्मय निधि' के नाम से एक निधि बनाने का निश्चय किया।"

चतुर्वेदी जी की हार्दिक अभिलाषा थी कि सामान्य हिन्दी पाठक को ज्ञान-विज्ञान के ऐसे विविध विषयों की सस्ती पुस्तकें सुलभ करायी जायें जो आमतौर से उपलब्ध नहीं होतीं। ऐसी पुस्तकों के प्रकाशन में निधि सहायता करती है। 'निधि' की सहायता से अब तक छ: पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं- **तमिल साहित्य का इतिहास, सल्तनतकालीन प्रमुख इतिहासकार, थाईलैंड, पाँचवीं-सातवीं शताब्दी का भारत, देश के अभिधान-भारत-हिन्दू-इण्डिया की निरुक्ति** तथा **एक भारतीय वनविद् के संस्मरण।**

'हिन्दी वाङ्मय निधि' के अध्यक्ष डॉ. शैलनाथ चतुर्वेदी ने लखनऊ के निवासियों को उनकी महान धरोहर से परिचित कराने के लिए 'हमारा लखनऊ पुरतकमाला' के प्रकाशन की योजना बनायी है। यह कठिन कार्य सुबुद्ध और सहृदय जनों के कारण सरल हो गया है। हमने जिससे भी इस योजना में सहयोग का अनुरोध किया, उसने पूर्ण सहयोग और समर्थन देकर अपना योगदान किया।

‘हमारा लखनऊ’ पुस्तकमाला

इधर हमारे देश के नगरों मे बड़ी तेज़ी से परिवर्तन हो रहा है। एक ओर नगर के पुराने निवासी अपनी विरासत से कटते जा रहे हैं तो दूसरी ओर बड़ी संख्या में बाहर से आकर नगरों में बसने वाले उसके विषय में कुछ नहीं जानते। इसका परिणाम यह है कि हम न तो अपने नगर-जनपद से प्रेम का नाता जोड़ पाते हैं और न उससे गौरव का भाव उत्पन्न कर पाते हैं। प्रेम और गौरवबोध के बिना हम अपने नगर-जनपद को सराय या होटल से अधिक भला क्या समझेंगे और तब उसके विकास की चिन्ता हम क्यों करेंगे।

हमारी दृष्टि में अपने नगर-जनपद से हमारा भावनात्मक सम्बन्ध होना ही चाहिए। यह तभी होगा जब हम उसके इतिहास को जानें, सांस्कृतिक विरासत से परिचित हों, विभिन्न वर्गों-सम्प्रदायों के नगर-जनपद को योगदान का आकलन करें, नगर की विभिन्न संस्थाओं और उसे गौरव प्रदान करने वाले व्यक्तियों के कार्य-कलापों को समझें। नगर-जनपद से प्यार वह धागा है जो उसके सभी निवासियों को बिना भेदभाव के जोड़ता है। वास्तव में जातीय और सांस्कृतिक इकाई के रूप में प्रत्येक जनपद का अपना रूप-रंग है जिनसे मिलकर हमारे देश भारत का निर्माण हुआ है। इस प्रकार नगर-जनपद से भावनात्मक नाता जोड़कर उसके विकास का सामूहिक प्रयत्न करना वस्तुत: भारत के विकास का प्रयत्न होगा।

लखनऊ जनपद के निवासियों को अपने नगर-जनपद का समग्र परिचय देने के लिए **हिन्दी वाङ्मय निधि** ने **हमारा लखनऊ** पुस्तकमाला निकालने का निश्चय किया है। इसके अंतर्गत लखनऊ जनपद के इतिहास, संस्कृति, कला, साहित्य तथा यहाँ के विशिष्ट व्यक्तियों, घटनाओं, संस्थाओं आदि विविध विषयों पर अधिकारी विद्वानों से छोटी-छोटी पुस्तिकाएँ तैयार कराने और सस्ते मूल्य पर प्रकाशित करने की योजना है। एक मिशन की तरह आरम्भ की गयी इस योजना को आपका समर्थन और संरक्षण मिलता रहा तो आपके नगर-जनपद के इतिहास और संस्कृति के सभी पक्ष आपके हाथों में होंगे।

शैलनाथ चतुर्वेदी

अध्यक्ष

हिन्दी वाङ्मय निधि

53 खुर्शेदबाग

लखनऊ-4

फोन. 2683132

‘हमारा लखनऊ’ पुस्तकमाला का बीसवाँ पुष्प आपके हाथों में है। अवध की बेगमों की कथा नवाबी युग के इतिहास का अत्यन्त रोचक और रोमांचक प्रसंग है। उस युग में बहुपत्नी-उपपत्नी रखने का रिवाज था, और यदि नवाब रसिया और ऐयाश हों, तो बात ही क्या। बेगम बनने के लिये उम्र, ओहदा, हैसियत, खानदान का कोई अर्थ नहीं था, केवल नवाब साहब की नज़र में चढ़ने भर की देर थी। परिणामस्वरूप मानवीय चरित्र का हर रूप, हर रंग बेगमों की जमात में शामिल था। इस दिलचस्प दास्तान के साथ ही नवाबों के जीवन और अवध के इतिहास को दूर तक प्रभावित करने वाले इस प्रसंग से पाठकों को परिचित कराने की बात मन में आयी तो हमने सुविज्ञ एवं सुपरिचित लेखक तथा हमारी पुस्तकमाला के परम हितैषी एवं सहयोगी डॉ. योगेश प्रवीन से अनुरोध किया। उन्होंने हमारा आग्रह सहर्ष स्वीकार करते हुए यह पुस्तक लिखने की कृपा की। हम हृदय से उनका आभार व्यक्त करते हैं। कवर पृष्ठ 2 के अधिकांश चित्र श्री कार्तिक माथुर ने उपलब्ध कराये हैं जिसके लिये हम उनके कृतज्ञ हैं। काठमाण्डू स्थित बेगम हज़रत महल की मज़ार का चित्र श्री रौशन तकी के सौजन्य से प्राप्त हुआ है। हम उनका आभार व्यक्त करते हैं।

पुस्तक का आवरण चित्रकला एवं शिल्प महाविद्यालय, लखनऊ के पूर्व प्राचार्य, उत्तर प्रदेश ललित कला अकादमी के पूर्व अध्यक्ष तथा सुप्रसिद्ध चित्रकार श्री योगी जी ने तैयार किया है। हम उनके कृतज्ञ हैं। श्री रवीन्द्र भार्गव, हिन्दुस्तानी आर्ट

काटेज तथा श्री पीयूष द्विवेदी, शिवम् आर्ट्स के सुझाव और सक्रिय सहयोग की इस पुस्तकमाला को चलाने में प्रमुख भूमिका है। हम अपने इन हितैषियों के प्रति कृतज्ञ हैं।

प्रोफेसर शैलेन्द्रनाथ कपूर

पूर्व अध्यक्ष,

प्राचीन भारतीय इतिहास एवं पुरातत्व विभाग

लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ

सचिव, हिन्दी वाङ्मय निधि

विषय सूची

अपनी बात 9

अवध के नवाब और उनके महलात 11

नवाब सआदत खाँ बरहानुलमुल्क 12

नवाब मिर्ज़ा अबुल मंसूर अली खाँ 'सफदरजंग' 14

नवाब मिर्ज़ा जलालुद्दीन हैदर 'शुजाउद्दौला' 19

नवाब मिर्ज़ा अमानी मिर्ज़ा यहिया खाँ आसफुद्दौला 24

नवाब मिर्ज़ा वज़ीर अली खाँ 'आसिफ जाह' 27

नवाब मिर्ज़ा मंगली, सआदत अली खाँ यामिनुद्दौला 29

नवाब मिर्ज़ा रफ़्तउद्दौला, प्रथम बादशाह गाज़ीउद्दीन हैदर 32

बादशाह नसीरुद्दीन हैदर 37

बादशाह मुहम्मद अली शाह 65

बादशाह अमजद आली शाह 69

बादशाह वाजिद अली शाह 84